अथकथा-इतिकथा

रामजी यादव

अथकथा—इतिकथा

१

बहुत दिनों से बंसू नहीं दिखे। जब वे कई दिनों तक नज़र नहीं आए तो कुछ लोगों के मुंह से कई लोगों ने सुना कि बंसू कमाने सूरत गए हैं। सब लोग बंसू को बचपन से जानते थे। सबको विश्वास था कि बंसू एक दिन लौटेंगे और बताएंगे कि इतने बड़े सूरत में उनके लायक कोई काम नहीं था। सग्गन कहते थे कि ईश्वर ने जब बंसू का ईजाद किया तो उसे उनके लायक एक काम भी निकालना चाहिए था लेकिन कलमुंहे ने अपने फर्ज़ से मुंह मोड़ लिया था। लिहाजा बंसू के व्यक्तित्व के अनुसार आज तक उन्हें कोई काम न मिला।

गाँव में बंसू इतने विलक्षण थे कि किसी के लिए भी काहिली के उदाहरण बन जाते थे। बनारसी अपने इस इकलौते और नालायक पुत्र से कभी खुश नहीं रहे। उनके मुंह से बंसू के लिए गालियों के सिवा कुछ न

निकला। गालियां रुटीन का हिस्सा हो गई थीं इसलिए बंसू मानते थे कि बाऊ उन्हें गाली नहीं आशीर्वाद देते हैं। माई उनकी इतनी गऊ कि एक पुत्र के लिए सात प्रसव-पीड़ा झेलने के साहस और दुखों के अनवरत सिलसिले के बावजूद बंसू के लिए रंभाती ही रहीं। बंसू के बहाने बनारसी जब-तब उन्हें भी उल्टा-सीधा कह देते। लेकिन वे इतनी कमजोर नहीं थीं कि रोतीं। उनकी आँखों में एक विरल हिम्मत और निडरता थी कि कोई भी परास्त हो जाता। पैंसठ साल की वह स्त्री एक कड़ी आवाज और दबंग व्यक्तित्व की मालकिन थी।

बनारसी हमेशा एक लाठी लिए रहते। पता नहीं वे साँप से डरते या कुत्तों से या आदमी से ही लेकिन लाठी उनके वजूद से अभिन्न थी। नेवता-हँकारी में भी लाठी उनके साथ होती। वे भैंस चराते, हल जोतते या किसी से बात करते, हर समय उनके सिर पर बंसू सवार रहते। उनके पास एक ही बैल था। दूसरा साझे का था। उनका बैल बावाँ था। साझे वाला दहिनवार था। दहिनवार को बावाँ की बनिस्बत अधिक ज़ोर पड़ता है लेकिन तब भी बनारसी का बैल जिसकी कजरारी आँखों के कारण उसका नाम कजरा रख दिया गया था, अक्सर बैठ जाता था। इस पर बनारसी का गुस्सा भड़क जाता। मुठिया छोड़कर दोनों हाथ से सटासट पैना चलाते। बावाँ आख़िर बाँ... बाँ .... करते उठ जाता और हदसकर एक-दो कूँड़ ऐसे चलता जैसे बनारसी को बता देना चाहता हो कि उसमें शक्ति और साहस दाहिने से ज्यादा हैं। बेचारा हाँफते-हाँफते नाक-बेवार फेंकने लगता। बनारसी उसे सधाते हुए बुदबुदाते रहते- 'हमार सार, तोहरी बाप की बिटिया की फलान चीज में। सनको मत। बंसुआ मत हो जाओ। होर रे होर ..... ना रे .... ना ... एकरी बहिन के ..... अइसन लड़िका ससुरा जनमते मर जाएं। करेजा खिया-खिया पोसो। खून पिया-पिया जिलाओ और ई बहनबेचऊ जियत जी छाती पर चैला बोझ रहे हैं।' और फटाक-फटाक तब तक पैना चलाते जाते जब तक बैल दौड़ने न लगते। फाल लगने से बचाते हुए वे स्वयं ज़ोर-ज़ोर से हाँफने लगते।

बनारसी के लिए कजरा का बंसू बन जाना अथवा बंसू का कजरा बन जाना कोई नई बात नहीं रह गई थी। वे जब कजरा को गाली देते या मारते तब उनके सामने बंसू की तस्वीर नाचने लगती। अक्सर बंसू को कोसते हुए उन्हें लगता कि भले जाँगर-चोर ही सही, ससुरा कितना भी बैठ जाता हो लेकिन है तो अपना ही बरधा। यह है तो खेती भी साथ-साथ हो जाती है। भले